अध्याय - 7

भारत : जनसंख्या

हम पढ़ेंगे

7.1 भारत की जनसंख्या।
7.2 जनसंख्या का वितरण।
7.3 जनसंख्या वितरण को प्रभावित करने वाले कारक।
7.4 भारत में जनसंख्या वृद्धि।
7.5 जनसंख्या वृद्धि के कारण।
7.6 जनसंख्या वृद्धि को नियंत्रित करने के उपाय।
7.7 भारत में लिंग अनुपात।
7.8 भारत में साक्षरता की स्थिति एवं वितरण
7.9 राष्ट्रीय जनसंख्या नीति।

7.1 भारत की जनसंख्या

संसार में चीन के बाद भारत दूसरा सबसे अधिक जनंसख्या वाला देश है। वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार भारत की जनसंख्या 1,21,05,69,573 हैं । यहां संसार की कुल जनसंख्या का लगभग 16.7 प्रतिशत भाग निवास करता है जबकि इसका कुल क्षेत्रफल विश्व के कुल क्षेत्रफल का केवल 2.41 प्रतिशत ही है । इस प्रकार भारत जनसंख्या के मान से विश्व का दूसरा तथा क्षेत्रफल की दृष्टि से सातवां बड़ा देश है । भारत की जनसंख्या कितनी अधिक है इसका अनुमान इसी बात से लगाया जा सकता है कि यहाँ की जनसंख्या उत्तरी अमेरिका, दक्षिणी अमेरिका और आस्ट्रेलिया की कुल सम्मिलित जनसंख्या से भी अधिक है ।

- भारत में पहली जनगणना सन् 1872 में हुई थी, लेकिन पहली पूर्ण जनगणना सन् 1881 में ही हुई । तब से प्रति दस वर्ष के अन्तराल पर जनगणना की जाने लगी है।
- 11 जुलाई 1987 को विश्व की जनसंख्या 5 अरब हो गई थी। इस प्रसंग पर प्रतिवर्ष 11 जुलाई को **विश्व जनसंख्या दिवस** के रूप में मनाया जाता है ।

देश की विशाल जनंसख्या सीमित संसाधनों पर निर्भर होने के कारण अनेक प्रकार की सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक समस्याएं पैदा हो गयी हैं। गरीबी और पर्यावरण का ह्रास वर्तमान भारत की दो प्रमुख समस्याएं है । जनसंख्या की विशालता के अलावा सामाजिक विषमता, अत्यधिक ग्रामीण स्वरूप और सम्पत्ति का असमान वितरण समस्या के अन्य पहलू हैं, जो सामाजिक और आर्थिक विकास की प्रक्रिया और गति को प्रभावित कर रहे हैं । मानव संसाधन के रूप में किसी देश की जनसंख्या का महत्व तब और अधिक बढ़ जाता है जब उसकी गुणवत्ता भी अधिक हो। आर्थिक विकास के लिए अधिक जनसंख्या के साथ उसकी गुणवत्ता भी आवश्यक है।

7.2 जनसंख्या का वितरण :

भारत में जनसंख्या का वितरण असमान है। पर्वतीय भागों, वन क्षेत्रों और मरूस्थलों की अपेक्षा मैदानी भागों में जनसंख्या अधिक है । इसी प्रकार नदियों के उपजाऊ मैदानों, समुद्र तटीय क्षेत्रों में जनसंख्या अधिक है। राज्यवार जनसंख्या का विवरण परिशिष्ट क्र. 2 में दिया है जिसके आधार पर राज्यवार अनेक विषमताएँ देखने को मिलती हैं । जैसे हिमालयीन छोटे राज्य सिक्किम की जनसंख्या मात्र 6.1 लाख ही है । इसके विपरीत मैदानी बड़े राज्य उत्तर प्रदेश की जनसंख्या 19.9 करोड़ है। कुल मिलाकर भारत में 10 ऐसे राज्य हैं जिनमें से प्रत्येक की जनसंख्या 5 करोड़ से अधिक है। कुछ राज्य क्षेत्रफल में बड़े होते हुए भी कम जनसंख्या वाले हैं, जैसे राजस्थान और मध्यप्रदेश जबकि ये दोनों ही क्षेत्रफल की दृष्टि से देश के बड़े राज्य हैं। केवल पाँच राज्यों (उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र, बिहार, पश्चिम बंगाल और

आंध्रप्रदेश) में देश की आधे से अधिक जनसंख्या निवास करती है ।

जनसंख्या का घनत्व : किसी क्षेत्र में निवास करने वाली जनसंख्या और उस क्षेत्र के प्रति इकाई क्षेत्रफल (वर्ग कि.मी.) के अनुपात को जनसंख्या का घनत्व कहते हैं । किसी देश या प्रदेश की जनसंख्या का घनत्व ज्ञात करने हेतु निम्नांकित सूत्र उपयोगी है–

$$\text{जनसंख्या घनत्व} = \frac{\text{देश/ प्रदेश की जनसंख्या}}{\text{देश/ प्रदेश का क्षेत्रफल (वर्ग कि.मी. में)}}$$

वर्ष 2011 में भारत में जनसंख्या का औसत घनत्व 382 व्यक्ति प्रति वर्ग कि.मी. हो गया है। इस प्रकार भूमि पर जनसंख्या का अत्यधिक दबाव देश के आर्थिक विकास की एक गम्भीर समस्या है। देश में जनसंख्या के घनत्व में निरन्तर वृद्धि होती जा रही है वर्ष 1921 में जनसंख्या का घनत्व 81 व्यक्ति प्रति वर्ग कि.मी. था। वर्ष 1951 में बढ़कर 117, वर्ष 1991 में 267, वर्ष 2001 में 325 एवं वर्ष 2011 में 382 व्यक्ति हो गया है।

भारत में जनसंख्या का घनत्व बड़ा असमान है। यह बात इस तथ्य से अधिक स्पष्ट हो जाती है कि जहां एक ओर अरूणाचल प्रदेश में जनसंख्या का औसत घनत्व 2011 की जनगणना के अनुसार केवल 17 व्यक्ति प्रति वर्ग कि.मी. है वहीं दिल्ली में घनत्व 11320 व्यक्ति प्रति वर्ग कि.मी. है ।

जनसंख्या घनत्व के आधार पर भारत को चार श्रेणियों में बांटा जा सकता है: उच्च घनत्व वाले क्षेत्र, मध्यम घनत्व वाले क्षेत्र, साधारण घनत्व वाले क्षेत्र तथा निम्न घनत्व वाले क्षेत्र। भारत में जनसंख्या घनत्व मानचित्र की सहायता से राज्यवार जनसंख्या के वितरण को देखिए।

1. उच्च घनत्व के क्षेत्र

भारत के जनसंख्या घनत्व वाले मानचित्र को देखने से ज्ञात होता है कि दिल्ली, चंडीगढ़, पाण्डिचेरी, दमन एवं दीव,लक्षद्वीप, बिहार, पश्चिम बंगाल, केरल, उत्तर प्रदेश, दादर नगर एवं हवेली, हरियाणा, तमिलनाडु एवं पंजाब में 501 से अधिक व्यक्ति प्रति वर्ग कि.मी. निवास करते हैं। यहां की उपजाऊ मिट्टी और जल की उपलब्धता लोगों के भरण–पोषण की पर्याप्त सुविधा प्रदान करता है। इन क्षेत्रों में नगरीकरण तथा औद्योगिकीकरण के कारण रोजगार के पर्याप्त अवसर तथा सेवाऐं भी लोगों को प्राप्त हैं।

2. मध्यम घनत्व के क्षेत्र

इसके अन्तर्गत वे क्षेत्र हैं, जहां जनसंख्या का घनत्व 251 से 500 व्यक्ति प्रति वर्ग कि.मी. पाया जाता है। इनमें झारखंड, असम, गोवा, महाराष्ट्र, त्रिपुरा, कर्नाटक, आंध्रप्रदेश, तेलंगाना, गुजरात व उड़ीसा शामिल हैं। इन क्षेत्रों में अधिक जनसंख्या के घनत्व के कारण हैं– विकसित कृषि तथा खनिजों की उपलब्धता एवं औद्योगिक विकास।

3. साधारण घनत्व के क्षेत्र :

इसके अन्तर्गत देश के वे सभी राज्य हैं जहां जनसंख्या का घनत्व 101 से 250 व्यक्ति प्रति वर्ग कि.मी. पाया जाता है। इस क्षेत्र में सम्मिलित प्रदेश हैं – मध्यप्रदेश, राजस्थान, उत्तराखंड, छत्तीसगढ़, मेघालय, जम्मू एवं कश्मीर, हिमाचल प्रदेश, नागालैण्ड एवं मणिपुर। ये पर्वतीय तथा ऊबड़–खाबड़ अर्धशुष्क वनाच्छादित प्रदेश हैं । यहां जीवन यापन की सुविधाएं सीमित हैं।

4. निम्न घनत्व वाले क्षेत्र :

इस क्षेत्र में सिक्किम, मिजोरम, अंडमान एवं निकोबार द्वीप समूह एवं अरूणाचल प्रदेश आते हैं। पर्वतीय क्षेत्र,

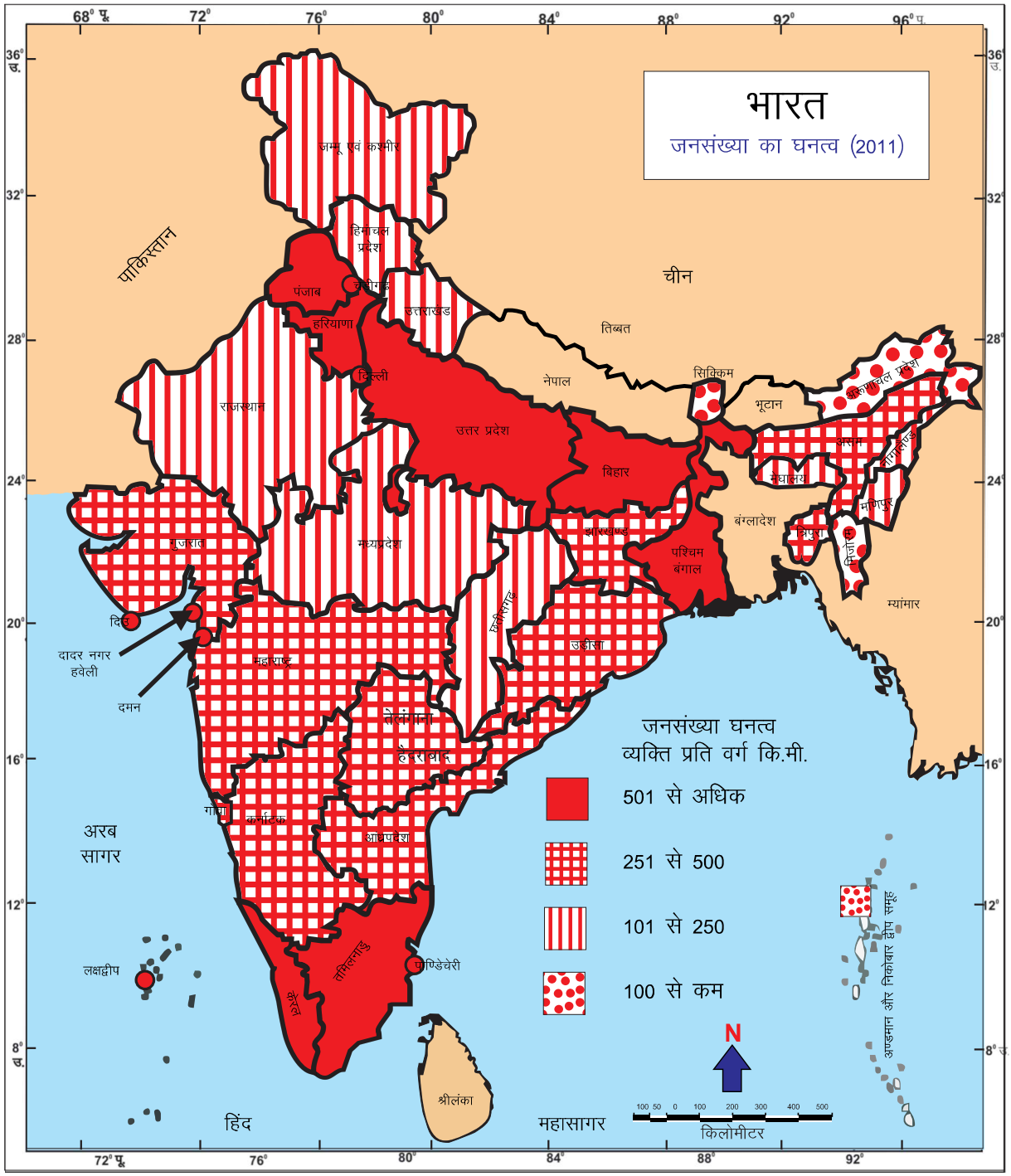

आवागमन के साधनों की कमी, कृषि व उद्योगों का विकास न होना न्यून घनत्व के लिए उत्तरदायी हैं। यहां जीवनयापन की सुविधाएं बहुत सीमित हैं । अरूणाचल प्रदेश में तो जनसंख्या का घनत्व 17 व्यक्ति प्रति वर्ग कि.मी. है ।

7.3 जनसंख्या के वितरण और घनत्व को प्रभावित करने वाले कारक

जनसंख्या के वितरण और घनत्व को निम्नलिखित कारक प्रभावित करते हैं - (1) भौतिक कारक (2) सामाजिक-आर्थिक कारक ।

1. भौतिक कारक : भौतिक कारकों में धरातल, जलवायु, मृदा और खनिज प्रमुख हैं । धरातलीय बनावट जनसंख्या के वितरण को सर्वाधिक प्रभावित करती है । एक ओर गंगा-यमुना तथा समुद्र तटीय मैदानों में सघन जनसंख्या पाई जाती है तो दूसरी ओर पर्वतीय प्रदेश अरूणाचल प्रदेश में सबसे कम जनसंख्या घनत्व है। जलवायु दशाएं भी जनसंख्या के घनत्व एवं वितरण को प्रभावित करती हैं । अनुकूल जलवायु मानव के स्वास्थ्य एवं कार्यक्षमता में सहायक होती है। शुष्क मरूस्थलीय पश्चिमी राजस्थान और अरूणाचल प्रदेश में विषम जलवायु के कारण विरल जनसंख्या मिलती है । उपजाऊ मृदा कृषि के लिए आदर्श होती है कृषि उपजें जीवन यापन व भरण-पोषण का मुख्य आधार होती है । अत: सघन जनसंख्या नदियों के उपजाऊ मैदानों में है। खनिजों की उपलब्धता और उन पर आधारित औद्योगिक विकास ने छोटा नागपुर का पठार खनिज क्षेत्र में जनसंख्या को आकर्षित किया । इस प्रकार छोटा नागपुर के पठार पर जनसंख्या बहुत सघन है।

2. सामाजिक-आर्थिक एवं सांस्कृतिक कारक : सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक कारक भी जनसंख्या के वितरण और घनत्व में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं । सांस्कृतिक, सामाजिक, ऐतिहासिक तथा राजनैतिक कारकों ने सम्मिलित रूप से मुम्बई-पुणे के औद्योगिक क्षेत्र में जनसंख्या वृद्धि और घनत्व को तेजी से बढ़ाया है । आज से वर्षों पूर्व मुम्बई क्षेत्र महत्वहीन था, लेकिन यूरोपियन लोगों के आने के बाद इसका महत्व बढ़ता गया और धीरे-धीरे यह व्यापारिक एवं औद्योगिक केन्द्र बन गया, जिसके कारण यहाँ जनसंख्या बढ़ती गई।

- जन्मदर को प्रतिवर्ष प्रति हजार जनसंख्या पर जीवित नवजात बच्चों की संख्या के रूप में गणना की जाती है।
- मृत्यु दर किसी क्षेत्र में प्रति वर्ष प्रति हजार व्यक्तियों पर मरने वालों की संख्या को कहा जाता है।
- इन दोनों दरों का अन्तर प्रतिवर्ष होने वाली प्राकृतिक वृद्धि दर कहलाता है।

7.4 भारत में जनसंख्या वृद्धि

भारत में जनसंख्या वृद्धि (1901 से 2011)

जनगणना वर्ष	जनसंख्या करोड़ में	दशकीय वृद्धि (%)
1901	23.84	–
1911	25.21	5.75
1921	25.13	-0.31
1931	27.90	11.00
1941	31.87	14.22
1951	36.11	13.31
1961	43.92	21.15
1971	54.82	24.80
1981	68.33	24.66
1991	84.63	23.87
2001	102.70	21.54
2011	121.06	17.7

आज लोगों का बड़ा समूह एक स्थान से दूसरे स्थान अथवा एक देश से दूसरे देश में जाकर रहने लगा है। इसे **जनसंख्या प्रवास** कहते हैं। जनसंख्या प्रवास भी किसी देश की जनसंख्या वृद्धि को प्रभावित करता है।

जनसंख्या की वृद्धि दर धनात्मक या ऋणात्मक हो सकती है। धनात्मक वृद्धि दर का अर्थ है किसी क्षेत्र में रहने वाले व्यक्तियों की संख्या में वृद्धि होना, जबकि ऋणात्मक वृद्धि का अर्थ है उस क्षेत्र में रहने वाले व्यक्तियों की संख्या में कमी होना। पिछले पृष्ठ पर दी गई तालिका के आधार पर भारत में जनसंख्या वृद्धि दर का पता लगाइए और देखिए कि कब जनसंख्या में ऋणात्मक वृद्धि हुई।

7.5 जनसंख्या वृद्धि के कारण

भारत में जनसंख्या वृद्धि के निम्नलिखित कारण हैं –

1. **जन्मदर तथा मृत्युदर :** 1911–1921 की अवधि में जन्मदर 48.1 और मृत्यु दर 47.2 थी, अर्थात् दोनों ही अधिक थी। 1921 से 1951 तक यद्यपि जन्मदर धीमी गति से घटी, किन्तु मृत्युदर अपेक्षाकृत तेजी से घटी। 1951 से 2011 के बीच जन्मदर एवं मृत्युदर निरंतर घटी है। 2011 में जन्मदर 20.97 एवं मृत्युदर 7.48 प्रति हजार व्यक्ति रही है। इनमें कमी का कारण चिकित्सा सुविधाओं में वृद्धि तथा भरण–पोषण की पर्याप्त सुविधा होना है।

2. **जीवन प्रत्याशा में वृद्धि :** जन्म दर तथा मृत्युदर के अन्तर को प्राकृतिक वृद्धि दर कहते हैं। जीवन की औसत आयु को जीवन प्रत्याशा कहा जाता है। हमारे देश में 1921 में जीवन प्रत्याशा (औसत आयु) 50 वर्ष थी, जो 2011 में बढ़कर 68.8 वर्ष हो गई है। अर्थात् लोगों की लम्बी औसत आयु के कारण जनसंख्या में वृद्धि होती गई।

3. **शिक्षा का अभाव :** अशिक्षा अन्धविश्वास को जन्म देती है। अधिकांश अशिक्षित लोगों का विश्वास है कि सन्तान भगवान की देन है ऐसा मानकर सन्तान पैदा करते जाते हैं और इस प्रकार जनसंख्या बढ़ती जाती है। पुत्र प्राप्ति की इच्छा भी परिवार में कई बच्चों के होने के लिए उत्तरदायी है। निम्न वर्ग परिवार कल्याण कार्यक्रम को अपनाने में संकोच करते हैं।

4. **अन्य कारण :** जनसंख्या वृद्धि के अन्य कारणों में गरीबी, मनोरजन के साधनों का अभाव, निम्न जीवन स्तर, बाल विवाह, प्रवास आदि हैं।

जनसंख्या वृद्धि के कारण देश में अनेक प्रकार की समस्याएं उत्पन्न हो रही हैं जैसे – गरीबी, बेरोजगारी, जीवन स्तर में गिरावट भुखमरी, अपराध में वृद्धि, आवासीय समस्या, परिवहन की समस्या, चिकित्सा सुविधाओं में कमी बढ़ता प्रदूषण आदि।

7.6 जनसंख्या वृद्धि को नियंत्रित करने के उपाय

यदि जनसंख्या वृद्धि को शीघ्र नियंत्रित नहीं किया गया तो भविष्य में विकास की धारा अवरूद्ध हो सकती है। जनसंख्या वृद्धि को नियंत्रित करने के लिए निम्नलिखित उपाय आवश्यक हैं –

1. परिवार कल्याण कार्यक्रम को अपनाया जाए।
2. शिक्षा का प्रसार विशेषकर स्त्री शिक्षा में वृद्धि की जाए।
3. बाल–विवाह को रोका जाए।
4. जीवन स्तर में सुधार लाया जाए।
5. सामाजिक सुरक्षा को तत्परता से लागू किया जाए।

7.7 भारत में लिंग अनुपात

लिंग अनुपात का अर्थ है किसी क्षेत्र में प्रति हजार पुरूषों पर महिलाओं की संख्या। भारत में वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार प्रति हजार पुरूषों पर 943 महिलाएँ हैं। इसका अर्थ यह हुआ कि पुरूषों की संख्या से महिलाओं की संख्या कम है, अर्थात् भारत में लिंग अनुपात प्रतिकूल है। जब स्त्रियों की संख्या पुरूषों से

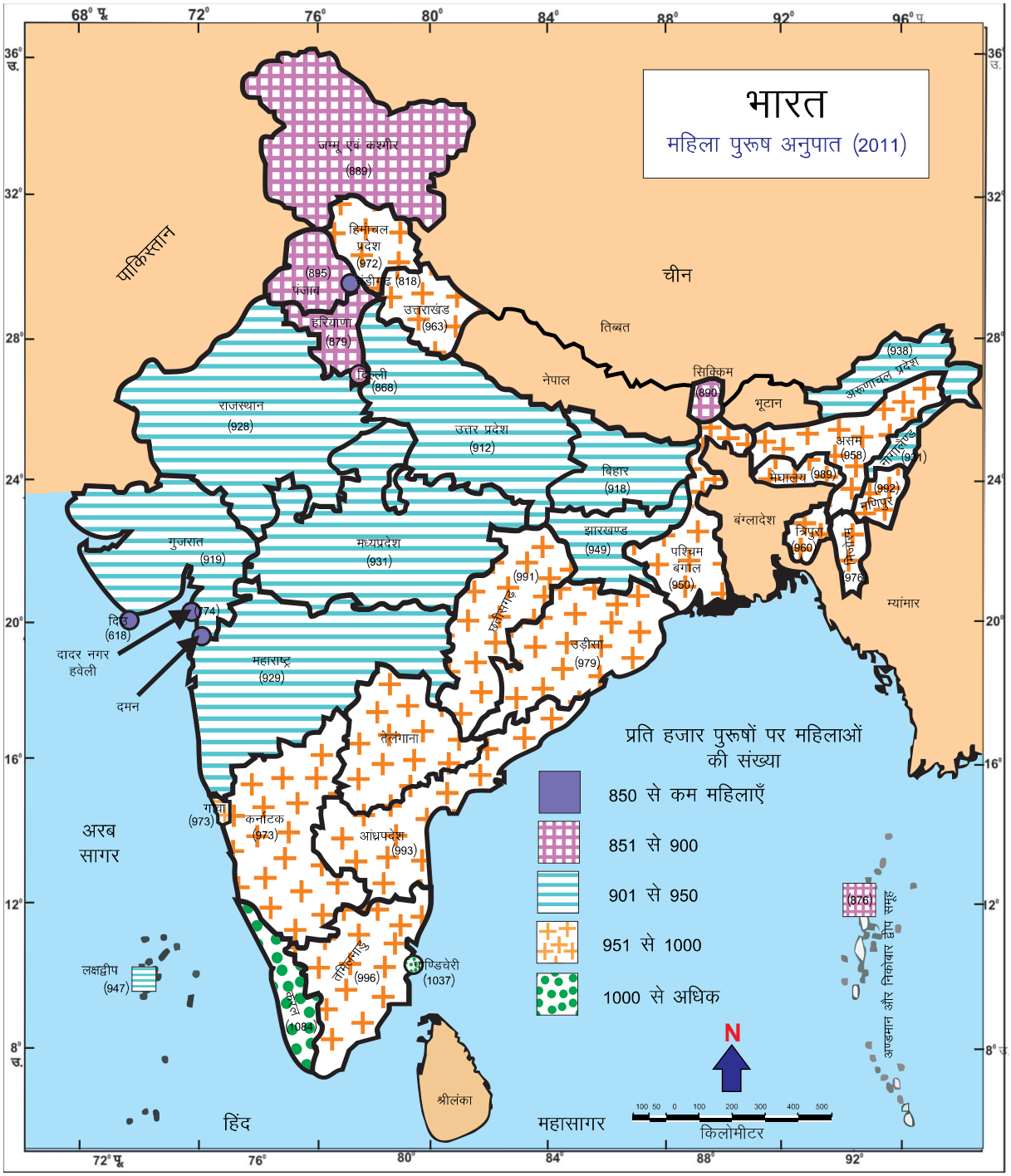

अधिक होती है, तो लिंग अनुपात अनुकूल कहा जाता है। भारत में लिंग अनुपात में क्षेत्रीय भिन्नता पाई जाती है। महिला पुरूष अनुपात वितरण का मानचित्र देखिए। केरल में लिंग अनुपात (1084) अनुकूल है जबकि दमन एवं दीव में (618) प्रतिकूल है।

भारत में लिंग अनुपात की स्थिति को अगले पृष्ठ पर दी गई तालिका में दर्शाया गया है, जिसमें पिछले सौ वर्षों के आंकड़ों के अध्ययन के आधार पर यह कहा जा सकता है कि भारत में लिंग अनुपात लगातार घटता जा रहा है। सन् 1901 में लिंग अनुपात 972 था, जो घटते-घटते 2011 में 943 रह गया।

भारत में लिंग अनुपात 1901 से 2011 तक

वर्ष	प्रति हजार पुरूषों पर महिलाओं की संख्या
1901	972
1911	964
1921	955
1931	950
1941	945
1951	946
1961	941
1971	930
1981	934
1991	927
2001	933
2011	943

भारत में लिंग अनुपात में गिरावट होने के निम्नलिखित कारण हैं –

1. महिलाओं में साक्षरता का कम होना।
2. ऊंची मातृमृत्यु दर होना।
3. पुरूष प्रधान समाज में पुत्र की कामना प्रबल होना।
4. कन्या भ्रूण हत्या में लगातार वृद्धि होना।
5. बालिकाओं के प्रति उपेक्षा का भाव व कन्या को बोझ समझना।
6. समाज में प्रचलित दहेज प्रथा के कारण कन्या भ्रूण हत्या व किशोरियों व युवतियों का आत्महत्या के लिए प्रेरित होना।

देश में गिरते लिंग अनुपात के लिए हमारी सामाजिक–धार्मिक अन्धविश्वास और प्राचीन रुढ़िवादी मान्यताएं अधिक उत्तरदायी हैं।

7.8 भारत में साक्षरता की स्थिति एवं वितरण

जो व्यक्ति किसी भाषा में समझ के साथ लिख और पढ़ सकता है, वह साक्षर कहलाता है। जो पढ़ सकता है, परन्तु लिख नहीं सकता साक्षर नहीं कहलाता है। साक्षर माने–जाने के लिए यह आवश्यक नहीं है कि व्यक्ति ने कोई औपचारिक शिक्षा प्राप्त की हो। हमारा देश संसार में जनसंख्या की दृष्टि से दूसरा और क्षेत्रफल की दृष्टि से सातवां बड़ा देश है, किन्तु साक्षरता की दृष्टि से अभी भी पीछे है। स्वतंत्रता के बाद हमने हर क्षेत्र में तेजी से विकास किया है और साक्षरता में भी वृद्धि की है, लेकिन अभी भी निरंतर प्रयास की आवश्यकता है।

पिछले सौ वर्षों में साक्षरता की दर में वृद्धि हुई। भारत में साक्षरता की स्थिति को अगले पृष्ठ पर दी गई तालिका से समझा जा सकता है। सदी के प्रारम्भ में (1911) में देश में साक्षरता दर लगभग 6 प्रतिशत थी। आजादी के बाद (1951) में यह बढ़कर 18.3 हो गई। सन् 2001 में यह 64.8 प्रतिशत और 2011 में 73 प्रतिशत हो गई। यहां यह उल्लेखनीय है कि 1911 में महिला साक्षरता दर केवल 1.1 प्रतिशत थी, वह 2011 में बढ़कर 64.6 प्रतिशत हो गई। यह उपलब्धि भारत सरकार द्वारा प्राथमिक शिक्षा सबको नि:शुल्क उपलब्ध कराने की नीति का परिणाम है।

भारत में साक्षरता की स्थिति (प्रतिशत में)

जनगणना वर्ष	कुल साक्षर	पुरूष	महिला
1911	6.0	N.A.	1.1
1951	18.33	27.17	8.86
1961	28.30	40.40	15.35
1971	34.45	45.96	21.97
1981	43.57	56.38	29.76
1991	52.21	64.13	39.29
2001	65.38	75.85	54.16
2011	73.00	80.9	64.6

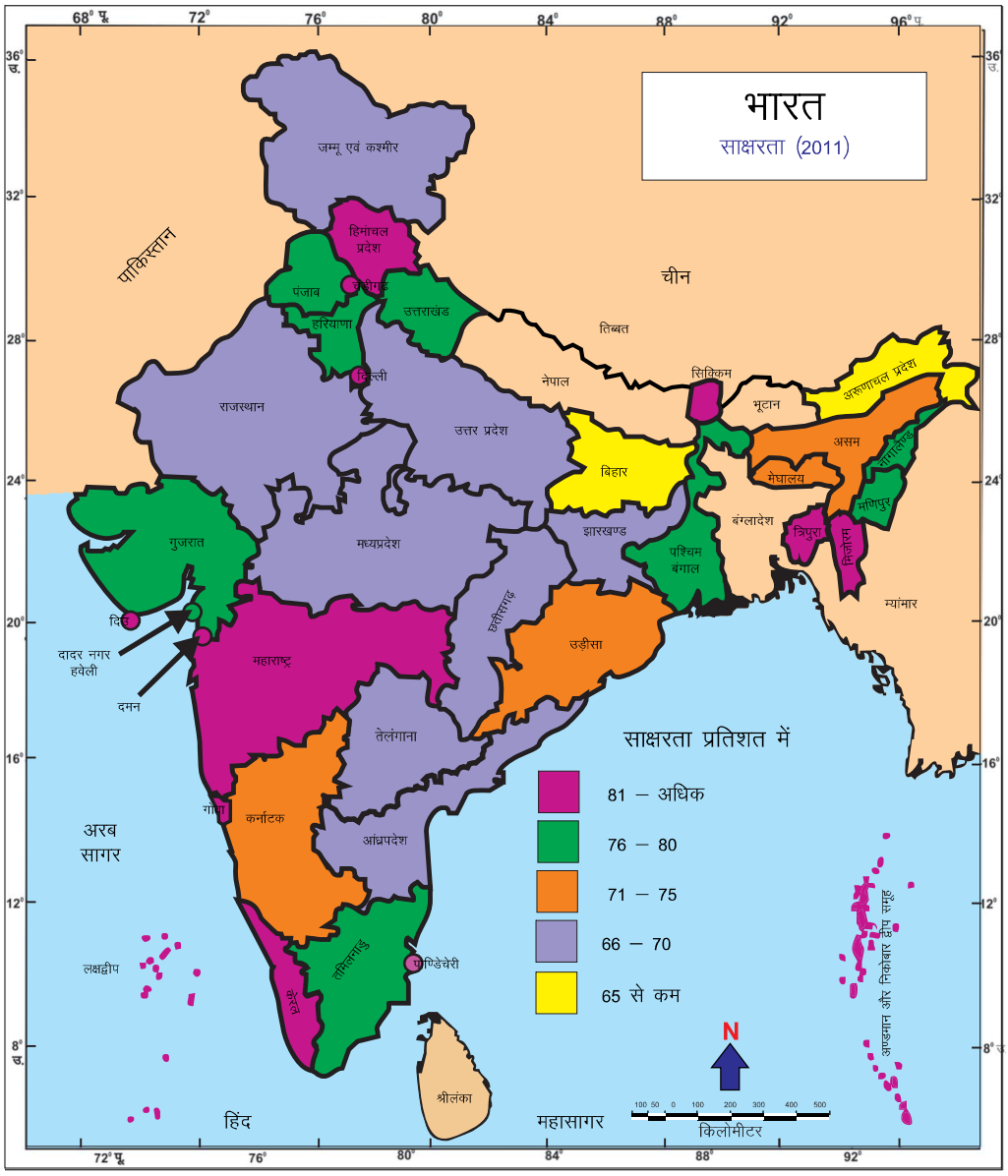

साक्षरता में भिन्नताऐं : साक्षरता की दर में प्रादेशिक भिन्नताएं अत्यधिक हैं। राज्यवार साक्षरता के वितरण को मानचित्र में देखिए। बिहार में साक्षरता की दर 61.8 प्रतिशत है जबकि केरल में यह 94.0 है। लक्षद्वीप में 91.8 और मिजोरम में 91.3 प्रतिशत साक्षरता है। बिहार में साक्षरता दर सभी राज्यों और केन्द्र शासित प्रदेशों की तुलना में सबसे कम है।

पुरूषों और स्त्रियों की साक्षरता दर में भी आश्चर्यजनक अन्तर है। भारत में पुरूषों की औसत साक्षरता दर 80.9 है, जबकि स्त्रियों की साक्षरता दर केवल 64.6 प्रतिशत है। शहरी और ग्रामीण जनसंख्या की साक्षरता दर में भी बहुत अन्तर है। वर्ष 2011 में शहरी क्षेत्रों में साक्षरता की दर 84.1 प्रतिशत थी, जबकि ग्रामीण क्षेत्रों में यह मात्र 67.8 प्रतिशत। राज्यवार साक्षरता की विस्तृत जानकारी को परिशिष्ट क्र.-3 में देखिए।

जनसंख्या 2011 एक नजर में

क्रं.	क्षेत्र	भारत	मध्यप्रदेश
1.	जनसंख्या का घनत्व	382	236
2.	कुल जनसंख्या	1,21,05,69,573	7,26,26,809
3.	कुल शहरी जनसंख्या प्रतिशत	31.2%	27.6
4.	कुल ग्रामीण जनसंख्या प्रतिशत	68.8%	72.4
5.	कुल साक्षरता	73.0%	69.3
6.	पुरूष साक्षरता	80.9	78.7
7.	महिला साक्षरता	64.6	59.2

7.9 राष्ट्रीय जनसंख्या नीति-2000

नवीन जनसंख्या नीति के अनुसार सामाजिक-आर्थिक विकास के लिए जीवन में गुणात्मक सुधार किया जाना आवश्यक है। जिससे मानव को समाज के लिए उत्पादक पूंजी के रूप में उपयोग किया जा सकें। इस नीति के तीन उद्देश्य हैं -

1. **तात्कालिक उद्देश्य** - गर्भ निरोधक उपायों के विस्तार हेतु स्वास्थ्य एवं बुनियादी ढांचे का विकास।
2. **मध्यकालीन उद्देश्य** - कुल प्रजनन दर को घटाना।
3. **दीर्घकालीन उद्देश्य** - सन् 2045 तक स्थायी आर्थिक विकास हेतु स्थिर जनसंख्या के उद्देश्य को प्राप्त करना।

नई नीति में इन उद्देश्यों की पूर्ति के लिए निम्नलिखित सामाजिक जनांकिकी लक्ष्य भी घोषित किए गए हैं -

- बुनियादी प्रजनन तथा शिशु स्वास्थ्य सेवाओं, आपूर्तियों तथा आधारभूत ढाँचे से संबंधित अपूर्ण आवश्यकताओं पर ध्यान देना।
- 14 वर्ष की आयु तक विद्यालयीन शिक्षा को मुफ्त तथा अनिवार्य बनाना। प्रारंभिक तथा माध्यमिक स्तर पर छात्र और छात्राओं दोनों का ही विद्यालय छोड़ने की दर में 20 प्रतिशत तक कमी लाना।
- प्रत्येक एक लाख जीवित जन्मों पर शिशु मृत्यु दर को 100 से नीचे लाना।
- टीकों द्वारा रोकथाम वाली बीमारियों के विरुद्ध सार्वभौमिक टीकाकरण को लागू करना।
- कन्याओं के विवाह में देरी को प्रोत्साहित करना। विवाह की उम्र 20 वर्ष के बाद करने को महत्व देना।
- सभी प्रसव संस्थाओं में प्रशिक्षित प्रसव दाइयों का शत-प्रतिशत होना।

- गर्भ निरोधक के व्यापक विकल्पों का पता लगाना।
- जन्म, मृत्यु, विवाह तथा गर्भावस्था का 100 प्रतिशत पंजीकरण कराना।
- एड्स के प्रसार को रोकना तथा प्रजनन अंग-संक्रमण (आरटीआई) और यौन संचारी रोगों का राष्ट्रीय एड्स नियंत्रण संगठन के बीच एकीकरण को बढ़ावा देना।
- संक्रमण बीमारियों की रोकथाम और नियंत्रण के लिए भरपूर प्रयास करना।
- प्रजनन एवं शिशु स्वास्थ्य सेवाओं की व्यवस्था को घरों तक पहुँचाने हेतु भारतीय औषध पद्धति को एकीकृत करना।
- जन्म दर में कमी लाने हेतु छोटे परिवार के मानदण्डों को ठोस रूप में बढ़ावा देना।
- परिवार कल्याण को जन-केन्द्रित कार्यक्रम के रूप में विकसित करना।

राष्ट्रीय जनसंख्या आयोग

राष्ट्रीय जनसंख्या नीति 2000 के अनुसरण में राष्ट्रीय जनसंख्या आयोग की स्थापना की गई है। प्रधानमंत्री इस आयोग के अध्यक्ष हैं और सभी राज्यों एवं केन्द्र शासित प्रदेशों के मुख्यमंत्री, प्रशासक तथा संबंधित केन्द्रीय मन्त्रालयों एवं विभागों के प्रभारी केन्द्रीय मंत्री, प्रतिष्ठित जनसांख्यिकीविद्, जनस्वास्थ्य, व्यावसायिक एवं गैर-सरकारी संगठन इस आयोग के सदस्य हैं।

राष्ट्रीय जनसंख्या नीति 2000 का अनुसरण करते हुए राष्ट्रीय जनसंख्या आयोग की ही तरह राज्य स्तरीय जनसंख्या आयोग (जिसके अध्यक्ष उस राज्य के मुख्यमंत्री हैं) का भी गठन कर लिया गया है।

जनगणना : एक निश्चित समयांतराल में जनसंख्या की आधिकारिक गणना। हमारे देश में प्रत्येक दस वर्ष पर जनगणना होती है।

जन्म दर : प्रति 1,000 व्यक्तियों में जन्म लेने वाले जीवित शिशुओं की संख्या।

मृत्यु दर : प्रति हजार व्यक्तियों में मरने वालों की संख्या को मृत्युदर कहते हैं।

जीवन प्रत्याशा : प्रत्येक व्यक्ति की औसत आयु।

लिंग अनुपात : प्रति 1000 पुरूषों पर महिलाओं की संख्या।

जनसंख्या वृद्धि दर : जनसंख्या की वृद्धि दर, जनसंख्या बढ़ने की गति बताती है। वृद्धि दर से बढ़ी हुई जनसंख्या की आधार वर्ष की जनसंख्या से तुलना की जाती है। इसे वार्षिक या दशकीय गति से ज्ञात किया जाता है।

अभ्यास

सही विकल्प चुनकर लिखिए-

1. निम्न में से किस अवधि में जनसंख्या वृद्धि लगभग स्थिर गति से बढ़ी है?
   (i) 1901-21 (ii) 1921 - 51
   (iii) 1951-81 (iv) 1981 - 2001
2. वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार सर्वाधिक जनसंख्या घनत्व वाला प्रदेश है-
   (i) उत्तर प्रदेश (ii) बिहार
   (ii) केरल (iv) पश्चिम बंगाल

3. किस राज्य में साक्षरता का प्रतिशत सबसे अधिक है?

(i) उत्तर प्रदेश (ii) केरल

(iii) गोवा (iv) दिल्ली

4. सबसे अधिक जनसंख्या घनत्व वाला केन्द्र शासित प्रदेश है –

(i) चण्डीगढ़ (ii) पाण्डिचेरी

(iii) दिल्ली (iv) लक्षद्वीप

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए-

1. भारत में जनसंख्या का घनत्व ..... है।
2. भारत में सर्वाधिक साक्षरता वाला राज्य ..... है।
3. राष्ट्रीय जनसंख्या आयोग का अध्यक्ष .....होता है।
4. विश्व जनसंख्या दिवस प्रतिवर्ष .....को मनाया जाता हैं।
5. जनसंख्या के मान से भारत का विश्व में ..... स्थान है।
6. भारत में महिलाओं की संख्या पुरूषों से ..... है।

अति लघुउत्तरीय प्रश्न

1. जन्म दर किसे कहते हैं ?
2. मृत्यु दर किसे कहते हैं ?
3. वर्ष 2011 में भारत में जनसंख्या का घनत्व कितना था?
4. वर्ष 2011 में भारत का लिंग अनुपात क्या था?
5. जनसंख्या और क्षेत्रफल की दृष्टि से भारत का विश्व में कौन-सा स्थान है ?

लघुउत्तरीय प्रश्न

1. जनसंख्या वृद्धि की कोई तीन समस्याएं लिखिए।
2. भारत में लिंगानुपात की दर निरन्तर क्यों कम होती जा रही है? कारण लिखिए।
3. राष्ट्रीय जनसंख्या आयोग से आप क्या समझते हैं? लिखिए।
4. लिंग अनुपात से क्या आशय है, देश में इसके वितरण को समझाइए।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. भारत में जनसंख्या वृद्धि के प्रमुख कारणों व उसके नियंत्रण के उपायों को लिखिए।
2. भारत में जनसंख्या घनत्व को प्रभावित करने वाले कारकों को उदाहरण सहित लिखिए।
3. घनत्व की दृष्टि से भारत को कितने भागों में विभाजित किया जा सकता है?
4. राष्ट्रीय जनसंख्या नीति 2000 क्या है एवं इसके तहत सरकार द्वारा क्या प्रावधान किए गए हैं? लिखिए।
5. भारत में साक्षरता में विकास की स्थिति तथा महिला साक्षरता को बढ़ाने के लिए अपने सुझावात्मक विचार लिखिए।